HISTORY

B.A.(Hon's)PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-I (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 9

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें □□□

https://youtu.be/ZfA3UPC1wgM

https://youtu.be/ah0FbdqMYfA

✓ प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (भाग– 1)

✓ वैदिक स्रोत.

* ब्राह्मण धर्म ग्रंथों में वेदों का सर्वश्रेष्ठ स्थान है|

* कुछ लोग वेदों को अपौरुषेय अर्थात देवकृत मानते हैं|

* वेद चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद|

@ ऋग्वेद:–

* ऋग्वेद ऋचा में बद्ध है।

* ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं|

* ऋग्वेद में कुल 10 28 (1017+ वालखिल्य सुक्त – 11) सूक्त हैं।

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

* इन सुक्तों के रचियता हैं – गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज और वशिष्ट आदि प्रमुख हैं।

* स्त्रियों में – लोपामुद्रा, घोषा, शची, पौलोमी और

कांक्षावृति रचयिता हैं।

* वेदों के श्लोकों को ऋचायें कहा जाता है|

* इन ऋचाओं की संख्या 10462 है।

* आठवें मंडल में मिली हस्तलिखित प्रतियां के परिशिष्ट को 'खिल' कहा गया है|

* पहले मंडल के प्रथम 50 सुक्त तथा समूचा आठवां मंडल कण्व वंश के ऋषियों का है|

* दूसरे से सातवां तक प्रत्येक मंडल एक एक ऋषि वंश का है। जैसे–गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, आत्रेय, बार्हस्पत्य और वशिष्ट।

* यह उन वंशों का नाम है|

* दूसरा और सातवां मंडल की ऋचाएं सर्वाधिक प्राचीन है।

* ऋग्वेद के 9 वें मंडल में देवता सोम का वर्णन है।

* पहला तथा दसवां मंडल अंत में जोड़ा गया।

* 10 वें तथा पहले का शेषांश (51–191) विविध ऋषियों के तथा विविध विषयक है।|

* समाज के चतुष्य वर्ण समाज के कल्पना का आदि श्रोत ऋग्वेद के दसवें मंडल में वर्णित पुरुष सूक्त है|

* ऋग्वेद में इंद्र के लिए 250 तथा अग्नि के लिए 200 श्लोकों का वर्णन है|

* वामन अवतार के 3 पदों के आख्यान का प्राचीनतम स्रोत ऋग्वेद है|

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

* वेद को ही सन्हिता कहा गया है और उस युग को संहिता युग कहा गया|

* भारत का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ वेद है| जिनका अंतिम प्रमाणिक संकलन महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास ने किया|

वेद का अर्थ– ज्ञान।

वेदव्यास का अर्थ– ज्ञान का संपादक हैं।

* उन्होंने वेदों की पांच संहिताएं कर दी|

ऋक, यजुष तथा सामवेद की तीन धाराएं मिलाकर "त्रयी"कहलाये।

'अथर्व वेद तथा इतिहास वेद' मिलाकर कुल पांच वेद हुए।

वैदिक ग्रंथों के शाखाएं एवं ब्राह्मण ग्रंथ:–

@ ऋग्वेद की कुल 5 शाखाएं हैं:–

शाकाल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, मांडुकेय।

* वर्तमान में ऋग्वेद की पहली शाखा ही उपलब्ध है

@ यजुर्वेद

यजुर्वेद में यज्ञ विधियों का प्रतिपादन किया गया है|

"यजुष" का अर्थ है यज्ञ।

* यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण "अध्वर्यु" नामक पुरोहित करता है।

* यजुर्वेद का कार्यक्षेत्र कुरूपंचाल है।

* यजुर्वेद के दो भेद हैं:–

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

(१) कृष्ण यजुर्वेद (२) शुक्ल यजुर्वेद।

* कृष्ण यजुर्वेद में मंत्रों का संग्रह है|

* शुक्ल यजुर्वेद में छंदोबद्ध मंत्रों के साथ गद्यात्मक भाग भी हैं|

* महर्षि पतंजलि द्वारा उल्लेखित यजुर्वेद के 101 शाखाओं में मात्र 5 ही शेष बचे हैं।

@ यजुर्वेद 5 शाखाओं में विभक्त है।

* प्रथम चार शाखाएं कृष्ण यजुर्वेद में समाहित है।

* कृष्ण यजुर्वेद:– काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी, तैतरीय।

* शुक्ल यजुर्वेद:– वाजसनेयी।

* शुक्ल यजुर्वेद विशेष प्रसिद्ध है इसका संबंध याज्ञिक अनुष्ठान से है।

* शुक्ल यजुर्वेद का अंतिम अध्याय इशोपनिषद है, जिसका विषय दार्शनिक और आध्यात्मिक है|

@ सामवेद

सामवेद में संकलित मंत्रों को देवताओं की स्तुति के समय गाया जाता था।

* सामवेद गान प्रधान है।

प्राचीनकाल में जो ऋषि सामवेद गाते थे उन्हें "उद्गाता" कहा जाता था।

* सामवेद में कुल 1549 ऋचाएं (मंत्र) है| जिनमें 75 नए हैं और शेष ऋगवेद से लिया गया है।

@ सामवेद की 3 शाखाएं हैं :–

कौथमीय, जैमिनीय, राणायनीय।

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

* कौथमीय का केवल सातवां प्रपाठक मिलता हैं।

@ अथर्ववेद

* यह वेद अथर्वा ऋषि द्वारा रचित है।

* इस वेद में कुल 40 अध्याय और 711 सूक्त हैं|

* अथर्ववेद में मंत्रों की संख्या 6000 है|

इसवेद का महत्वपूर्ण विषय है ब्रह्म ज्ञान औषधि–प्रयोग रोग निवारण तंत्र मंत्र टोना टोटका जादू विविध वर्ण्य विषय है|

@ अथर्ववेद की दो शाखाएं है:–

पिप्पलाद और शौनक।

@ ब्राह्मण धर्म ग्रंथ....

वेदों अथवा संहिताओं और वैदिक शाखाओं के बाद ब्राह्मण ग्रंथ आता है|

* यज्ञों के विषयों का अच्छी तरह प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ को ही ब्राह्मण ग्रंथ कहते हैं|

* ब्राह्मण ग्रंथों की रचना गद्य और पद्य दोनों में हुई है|

* प्रत्येक वेद के अपने–अपने ब्राह्मण ग्रंथ होते हैं|

* ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ दो है।

(१) ऐतरेय ब्राह्मण

(२) कौषीतिकी या सांख्यायन ब्राह्मण|

* ऐतरेय ब्राह्मण की रचना महि दास ने की है|

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

* इस ब्राह्मण ग्रंथ में 8 मंडल हैं और प्रत्येक मंडल के 5 अध्याय हैं जिन्हें "अष्ट पंचिका" कहते हैं|

@ यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ :–

(१) शतपथ ब्राह्मण

(२) वाजसनेय ब्राह्मण|

@ शतपथ ब्राह्मण के दो पाठ हैं:–

(१) माध्यान्दिन (२) कण्व।

@ सामवेद के ब्राह्मण ग्रंथ :–

(१) पंचविश या ताण्डय ब्राह्मण

(२) षडविंश

(३) जमैनीय (तल्वाकार) ब्राह्मण

(४) छान्दोग्य ब्राह्मण

इनमें से पंचविश या ताण्डेय ब्राह्मण सबसे महत्वपूर्ण है|

@ अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रंथ:–

गोपथ ब्राह्मण।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

DR GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)